डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक 30-05-2020

विषय- प्रथम पत्र (संस्कृत साहित्य का इतिहास)

वेद का संक्षिप्त परिचय

'वेद' शब्द विद्'धातु से बना है। 'विद्' धातु का अर्थ है- उत्तम या धार्मिक ज्ञान। अतः कुरान, बाइबिल, त्रिपिटक आदि की भांति 'वेद' किसी एक साहित्यिक रचना का नाम नहीं है ,अपितु 'वेद' उस समस्त वांग्मय का नाम है, जो शताब्दियों में ही नहीं बल्कि सहस्त्राब्दियों में आकर ऋषि द्वारा उपलब्ध हुआ है, तथा जो ज्ञान स्वरूप है और परंपरा से मौखिक रूप में ही चलता रहा है। यह वैदिक साहित्य संसार में सबसे अधिक प्राचीन तथा उपयोगी है। साहित्य संसार के संपूर्ण साहित्य में भारतीय साहित्य की श्रेष्ठता का एकमात्र कारण वैदिक साहित्य ही है। इसी के कारण आज भारतीय साहित्य को इतना गौरव प्राप्त है । आर्यों की सभ्यता और संस्कृति, समाज और धर्म के जानने का एक मात्र साधन भी यही वैदिक साहित्य है। धर्म के क्रमिक विकास तथा आर्य भाषा के मूल स्वरूप का ज्ञान भी इसी साहित्य से प्राप्त होता है। 'वेद' हिंदुओं के लिए तो जीवन सर्वस्व हैं परंतु इसके साथ ही संसार के अन्य धर्मावलंबियों के लिए भी यह अत्यधिक उपादेय एवं महत्व शाली है। पश्चात विद्वान ने इसी कारण लिखा है, जो मनुष्य वैदिक साहित्य के समझने में असमर्थ रहता है वह भारतीय संस्कृति को नहीं जान सकता, इतना ही नहीं, वैदिक साहित्य से अनभिज्ञ व्यक्ति बौद्ध साहित्य के रहस्य को समझने में असमर्थ रहता है। क्योंकि बौद्ध साहित्य वैदिक साहित्य का नवीन विकास या नव्य रूप है। इतना ही नहीं विद्वानों का कथन है कि यदि हम अपनी ही संस्कृति के प्रारंभिक दिनों की अवस्था को जानने के इच्छुक है तो हमें सबसे पुरानी भारोपीय संस्कृति को समझना पड़ेगा क्योंकि भारोपीय संस्कृति में भारत की संपूर्ण संस्कृति निहित है, उसमें भारोपीय जाति का साहित्य सुरक्षित है।

विभाग-

वेदों के प्रधानत: दो विभाग है- 1. संहिता और 2. ब्राह्मण। मंत्रों के समुदाय का नाम 'संहिता' है, तथा ब्राह्मण ग्रंथों में एक प्रकार से संहिताओं के संग्रहीत मंत्रों की विस्तृत व्याख्या की गई है, परंतु मुख्य रूप से ब्राह्मण-ग्रंथों का लक्ष्य-यज्ञ का सविस्तार वर्णन करना ही रहा है। इन ब्राह्मण-ग्रंथों के तीन भाग मिलते हैं- 1.ब्राह्मण 2.आरण्यक और 3.उपनिषद। ब्राह्मणों में संहिताओं के मंत्रों की व्याख्या के साथ-साथ यज्ञों का विस्तार पूर्वक विवेचन किया गया है परंतु आरण्यकों में यज्ञों के आध्यात्मिक रूप का वर्णन मिलता है। यह आरण्यक ग्रंथ जनसाधारण से दूर जंगलों में पढ़े जाने के कारण ही संभवत आरण्यक कहलाते हैं। ब्राह्मण ग्रंथ गृहस्थों के लिए उपादेय है, जबकि आरण्यकों का निर्माण वानप्रस्थों के लिए हुआ है, ऐसा जान पड़ता है। उपनिषद से तात्पर्य ब्रह्मविद्या से है।

किसी देवता विशेष की स्तुति में प्रयुक्त होने वाले अर्थ को स्मरण कराने के सक्षमता वाले वाक्य मंत्र कहलाते हैं और ऐसे ही मंत्रों का समुच्चय 'संहिता' के नाम से अभिहित किया जाता है।यह संहिता चार है- ऋग्वेद संहिता, यजुर्वेद संहिता, सामवेद संहिता, और अथर्ववेद संहिता। इन संहिताओं का संकलन वेदव्यास मुनि द्वारा यज्ञ की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर किया गया था। प्रत्येक यज्ञ के लिए ऋत्विजों की आवश्यकता होती है - 1. होता 2. अध्वर्यु 3. उद्गाता और 4. ब्रह्मा। 'होता' का कार्य यह है कि यज्ञ के अवसर पर देवता विशेष की प्रशंसा के मंत्रों का उच्चारण करता हुआ उस देवता का आह्वान करता है। 'होता' के लिए जिन मंत्रों की आवश्यकता होती है वे सभी मंत्र ऋग्वेद संहिता में संग्रहित है। दूसरे अध्वर्यु का कार्य यज्ञों का विधिवत् संपादन करना है। उसके लिए आवश्यक मंत्रों का संकलन यजुर्वेद में है। तीसरे उद्गाता का कार्य है कि वह यज्ञों में आवश्यक मंत्रों को स्वर सहित उच्च गति से गान करें। उद्गाता का शाब्दिक अर्थ है, उच्च स्वर से गाने वाला । उद्गाता के लिए आवश्यक मंत्रों का संग्रह सामवेद संहिता में किया गया है। चौथे ब्रह्मा का कार्य है यज्ञों का सम्यक निरीक्षण करना। यह ब्रह्मा यज्ञ कार्य का निरीक्षण करता रहता है जिसे कोई त्रुटि न हो । यदि मंत्रों के उच्चारण में कोई त्रुटि हो जाती है और उनसे कोई विघ्न होने की संभावना होती है तो ब्रह्मा तुरंत मंगलकारी मंत्रों का उच्चारण करके उस विघ्न को दूर कर देता है। इस कारण इसके लिए इन मंत्रों की आवश्यकता होती है। वे सभी मंत्र अथर्ववेद संहिता में संग्रहित है। इस प्रकार ऋत्विजों द्वारा यज्ञानुष्ठान में प्रयुक्त होने वाले मंत्रों को चार संहिताओं में संगृहित किया गया है । इन संहिताओं में सूक्तियां, प्रार्थनाएं तथा यज्ञ विधान सम्बन्धी मन्त्र भरे पड़े हैं । पहले विभिन्न ऋषि-कुलों द्वारा अनेक संहिताओं का संकलन हुआ था । परंतु आजकल केवल उपर्युक्त चार संहिताएं ही उपलब्ध है। इन संहिताओं की अपनी अलग-अलग ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद है ।